Total No. of Printed Pages—4

4 SEM TDC HINH (CBCS) C 9

2026

(May/June)

HINDI

(Core)

Paper : C-9

(हिन्दी उपन्यास)

Full Marks : 80
Pass Marks : 32

Time : 3 hours

The figures in the margin indicate full marks for the questions.

1. निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर पूर्ण वाक्य में दीजिए : 1×8=8

(क) प्रेमचंद जी किस प्रकार के उपन्यासकार माने जाते हैं?

(ख) जालपा की सखी का नाम क्या है?

(ग) 'त्यागपत्र' किस प्रकार का उपन्यास है?

(घ) 'त्यागपत्र' उपन्यास का प्रकाशन कब हुआ?

(ङ) राजा भगत अपने साथ किसको लेकर आए?

(च) 'मानस का हंस' उपन्यास किसकी जीवन-कथा पर आधारित है?

(छ) गाँववाले बिसेसर को किस नाम से पुकारते हैं?

(ज) 'महाभोज' की कथा किस गाँव पर आधारित है?

2. संप्रसंग व्याख्या कीजिए : 8×4=32

(क) बनेगा तब बनेगा, इस अवसर पर तो नहीं बना। दस-पाँच की चीज तो है नहीं कि जब चाहा बनवा लिया, सैकड़ों का खर्च है, फिर कारीगर तो हमेशा अच्छे नहीं मिलते।

अथवा

रूदन में कितना उल्लास, कितनी शांति, कितना बल है। जो कभी एकांत में बैठकर किसी की स्मृति में, किसी के वियोग में, सिसक-सिसक और बिलख-बिलख नहीं रोया, वह जीवन के ऐसे सुख से वंचित है, जिस पर सैकड़ों हँसियाँ न्यौछावर हैं। उस मीठी वेदना का आनंद उन्हीं से पूछो, जिन्होंने सौभाग्य प्राप्त किया है।

(ख) हाँ, चिड़िया! उसके छोटे-छोटे पंख होते हैं, पंख खोल वह आसमान में जिधर चाहे उड़ जाती है। क्यों रे, कैसी मौज है! नन्हीं-सी चिड़िया, नन्हीं-सी पूँछ। मैं चिड़िया बनना चाहती हूँ।

अथवा

ऐसा लगता है कि मानो कलियुग आजतक यहाँ प्रवेश करने का साहस भी नहीं कर पाया है। यहाँ अब भी जगदम्बा सहित रामभद्र निवास करते हैं और लखनलाल सदा वीरासन पर बैठकर पहरा दिया करते हैं।

(ग) "दोषी मेरा भाग्य है। तुम्हें पाकर एक जगह मैं अपने आपको इतना धन्य अनुभव करती हूँ कि अपने दुर्भाग्य पर बीच-बीच में बावली खीझ उठ पड़ती है। मैं अपने आपसे विवश हूँ स्वामिन्।" कहकर वह फिर पति की छाती में मुँह गड़ाकर फूट-फूटकर रोने लगी।

अथवा

जिन्दगी है, चलती जाती है। कौन किसके लिए थमता है? मरते हुए मर जाते हैं, लेकिन जिनको जीना है, वे तो मुर्दों को लेकर वक्त से पहले मर नहीं सकते। गिरने के साथ कोई गिरता है? यह तो चक्कर है।

(घ) चाहूँ तो इंक्वायरी भी बैठा सकता हूँ कि रैली के नाम पर पानी की तरह बहाया जाने वाला यह रुपया कहाँ से आया? पर नहीं, यह घटियापन मैं करूँगा नहीं। राजनीति मेरे लिए स्वार्थनीति नहीं है और चाहता हूँ कि मेरे साथ काम करने वाले लोग भी इस बात को अच्छी तरह समझ लें।

अथवा

सच पूछा जाए तो बड़ा न आदमी होता है, न घटना। यह तो बस मौके-मौके की बात होती है। मौका ही ऐसा आ पड़ा है। इस समय तो सरोहा में पत्ते का हिलना भी एक घटना की अहमियत रखता है। डेढ़ महीने बाद ही तो चुनाव हैं। यों उपचुनाव विद्वान सभा की एक सीट भर का है, फिर भी है बहुत महत्त्वपूर्ण।

3. निम्नलिखित में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए : 10×4=40

(क) 'गबन' उपन्यास के शीर्षक की सार्थकता पर प्रकाश डालिए।

(ख) 'गबन' उपन्यास की समस्याओं को उजागर कीजिए।

(ग) 'त्यागपत्र' उपन्यास की कथावस्तु की समीक्षा कीजिए।

(घ) 'त्यागपत्र' उपन्यास की नायिका मृणाल का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(ङ) 'मानस का हंस' उपन्यास के आधार पर तुलसीदास का चरित्रांकन कीजिए।

(च) 'मानस का हंस' उपन्यास के आधार पर रत्नावली का चरित्र-चित्रण कीजिए।

(छ) उपन्यास के तत्त्वों के आधार पर 'महाभोज' उपन्यास की समीक्षा कीजिए।

(ज) सिद्ध कीजिए कि मन्नू भंडारी 'महाभोज' में अपने उद्देश्य में सफल रही हैं।

★★★